Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

*A Referred Peer Review Research Journal*

Vindhyan Bloom

*ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026*

| *Manuscript Information* | *Research Paper* | *Paper No. VBRP-42* |
|---|---|---|

# सतत शहर एवं जैव विविधता संरक्षण: शहरी शासन और पर्यावरणीय स्थिरता का एक राजनीतिक विज्ञान दृष्टिकोण

***डॉ. हुक्का कटारा,*** *सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शासकीय माधव महविद्यालय उज्जैन*

**सारांश**: वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में तीव्र शहरीकरण, औद्योगीकरण तथा जनसंख्या वृद्धि के कारण प्राकृतिक संसाधनों और जैव विविधता पर बढ़ता दबाव पर्यावरणीय चुनौतियों को गंभीर बना रहा है। ऐसे में सतत शहर की अवधारणा आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन तथा पर्यावरण संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है।

यह शोध-पत्र राजनीतिक विज्ञान के दृष्टिकोण से सतत शहरों और जैव विविधता संरक्षण के संबंध का विश्लेषण करता है। अध्ययन में शहरी शासन, सार्वजनिक नीतियों, स्थानीय निकायों तथा नागरिक सहभागिता की भूमिका का परीक्षण किया गया है। पर्यावरणीय शासन सिद्धांत, शहरी राजनीतिक पारिस्थितिकी तथा सतत विकास सिद्धांत को इसके सैद्धांतिक आधार के रूप में अपनाया गया है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रभावी शहरी शासन, सहभागी नीति-निर्माण, हरित अवसंरचना तथा स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी जैव विविधता संरक्षण और पर्यावरणीय स्थिरता को सुदृढ़ करती है। साथ ही, सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु पर्यावरणीय नीतियों और शहरी प्रशासन के बीच समन्वय आवश्यक है।

मुख्य शब्द: सतत शहर, जैव विविधता संरक्षण, शहरी शासन, पर्यावरणीय स्थिरता, सतत विकास।

## प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी में तीव्र शहरीकरण वैश्विक विकास की एक प्रमुख प्रवृत्ति बनकर उभरा है। आर्थिक प्रगति, औद्योगिकीकरण तथा बेहतर जीवन-स्तर की आकांक्षा ने शहरों के विस्तार को गति

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

दी है। किंतु इस प्रक्रिया ने प्राकृतिक संसाधनों, पारिस्थितिक तंत्रों तथा जैव विविधता पर गंभीर दबाव भी उत्पन्न किया है। अनियोजित शहरी **विकास**, भूमि उपयोग में परिवर्तन और बढ़ते प्रदूषण के कारण पर्यावरणीय असंतुलन तथा जैव विविधता का क्षरण एक **महत्वपूर्ण** चुनौती बन गया है।

जैव विविधता किसी भी **पारिस्थितिकी** तंत्र की स्थिरता और मानव **कल्याण** का आधार है। यह स्वच्छ वायु, जल, खाद्य सुरक्षा, जलवायु संतुलन तथा अन्य आवश्यक पारिस्थितिक सेवाएँ **प्रदान** करती है। इसलिए शहरी विकास और जैव विविधता संरक्षण के **मध्य** संतुलन स्थापित करना सतत विकास **की** अनिवार्य आवश्यकता है।

इसी संदर्भ में सतत शहर की अवधारणा महत्वपूर्ण है, **जिसका** उद्देश्य आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन तथा पर्यावरणीय संरक्षण के बीच संतुलित संबंध स्थापित करना है। हरित अवसंरचना, पर्यावरण-अनुकूल शहरी नियोजन, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग तथा जैव विविधता संरक्षण इसके प्रमुख आयाम हैं।

राजनीतिक विज्ञान के **दृष्टिकोण** से यह विषय विशेष महत्व रखता है, क्योंकि शहरी विकास और पर्यावरण **संरक्षण** से संबंधित नीतियाँ, संस्थाएँ तथा शासन-प्रक्रियाएँ राजनीतिक निर्णयों से प्रभावित होती हैं। प्रभावी शहरी शासन, सहभागी नीति-निर्माण तथा नागरिक सहभागिता के माध्यम से ही सतत एवं **पर्यावरण**-अनुकूल शहरों का निर्माण संभव है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का **उद्देश्य** सतत शहरों एवं जैव विविधता संरक्षण के मध्य संबंधों का राजनीतिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण करना तथा यह समझना है कि शहरी शासन और **सार्वजनिक** नीतियाँ पर्यावरणीय स्थिरता को **किस** प्रकार सुदृढ़ कर सकती हैं।

सतत शहरों की अवधारणा एवं आयाम

सतत शहर ऐसी शहरी व्यवस्था को कहा जाता है जो विकास की वर्तमान आवश्यकताओं को पूरा करते हुए प्राकृतिक संसाधनों, पर्यावरण तथा **सामाजिक** हितों की दीर्घकालिक सुरक्षा **सुनिश्चित** करे। इसका मूल उद्देश्य **आर्थिक** प्रगति, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय संरक्षण के मध्य संतुलन **स्थापित** करना है। सतत शहरों में **प्राकृतिक** संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, हरित **क्षेत्रों** के संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण, जल एवं ऊर्जा प्रबंधन तथा जैव विविधता के **संवर्धन** पर विशेष ध्यान दिया जाता है। साथ ही, यह नागरिकों को शिक्षा, **स्वास्थ्य**, आवास, स्वच्छता और परिवहन जैसी मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराने के साथ समावेशी एवं न्यायपूर्ण विकास को बढ़ावा देता है। इसके अतिरिक्त, पारदर्शी, **उत्तरदायी** और

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

सहभागी शहरी शासन सतत शहरों की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, जो विकास योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करता है। इस प्रकार सतत शहर केवल भौतिक अवसंरचना के विकास का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे ऐसे संतुलित शहरी समाज की परिकल्पना प्रस्तुत करते हैं जो आर्थिक रूप से सक्षम, सामाजिक रूप से समावेशी और पर्यावरणीय रूप से स्थायी हो।

**शहरीकरण और जैव विविधता का ह्रास**

शहरीकरण आधुनिक विकास की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जिसने आर्थिक प्रगति और जीवन-स्तर में सुधार तो किया है, लेकिन इसके कारण जैव विविधता पर गंभीर प्रभाव भी पड़ा है। शहरों के विस्तार के लिए वन क्षेत्रों, आर्द्रभूमियों और अन्य प्राकृतिक आवासों को आवासीय, औद्योगिक तथा व्यावसायिक क्षेत्रों में परिवर्तित किया जाता है, जिससे अनेक जीव-जंतुओं और वनस्पतियों के प्राकृतिक आवास नष्ट हो जाते हैं। इसके साथ ही हरित क्षेत्रों में कमी, बढ़ता प्रदूषण, अपशिष्टों का अनुचित प्रबंधन तथा प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन पारिस्थितिक संतुलन को कमजोर करता है।

शहरी क्षेत्रों में बढ़ते तापमान, जलवायु परिवर्तन और शहरी ऊष्मा द्वीप प्रभाव (Urban Heat Island Effect) भी जैव विविधता के लिए चुनौती उत्पन्न करते हैं। इन परिस्थितियों के कारण कई प्रजातियों के अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगता है तथा पारिस्थितिक तंत्र की स्थिरता प्रभावित होती है। इसलिए आवश्यक है कि शहरी विकास की नीतियों में हरित अवसंरचना, जैव विविधता संरक्षण, पर्यावरण-अनुकूल नियोजन तथा सतत संसाधन प्रबंधन को प्राथमिकता दी जाए, जिससे विकास और पर्यावरण के मध्य संतुलन बनाए रखा जा सके।

**शहरी शासन का राजनीतिक विज्ञान दृष्टिकोण**
**दृष्टिकोण**

राजनीतिक विज्ञान के अनुसार शहरी शासन केवल प्रशासनिक कार्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सरकार, स्थानीय निकायों, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज तथा नागरिकों के बीच सहयोग और समन्वय की प्रक्रिया है। इसका उद्देश्य शहरी विकास, सामाजिक कल्याण और पर्यावरणीय संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित करना है। सतत शहरों और जैव विविधता संरक्षण के लिए प्रभावी शहरी शासन अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि पर्यावरणीय नीतियों का निर्माण और क्रियान्वयन शासन संस्थाओं के माध्यम से ही संभव होता है।

शहरी शासन का एक महत्वपूर्ण पक्ष पर्यावरणीय शासन है, जो प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, सतत उपयोग और

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने पर बल देता है। इसके साथ ही बहुस्तरीय शासन, विकेंद्रीकरण तथा स्थानीय स्वशासन की व्यवस्थाएँ **पर्यावरणीय** नीतियों को अधिक प्रभावी बनाती हैं। भारत में 73वें और 74वें संविधान संशोधनों ने स्थानीय निकायों को सशक्त बनाकर शहरी प्रबंधन में उनकी भूमिका को बढ़ाया है।

पर्यावरणीय लोकतंत्र भी **शहरी** शासन का एक महत्वपूर्ण तत्व है, **जिसके** अंतर्गत नागरिकों को पर्यावरणीय **निर्णयों** में भागीदारी का अवसर प्रदान **किया** जाता है। सार्वजनिक सहभागिता, **पारदर्शिता** और जवाबदेही के माध्यम से शहरी **विकास** को अधिक समावेशी और टिकाऊ बनाया जा सकता है। इस प्रकार प्रभावी **शहरी** शासन सतत शहरों के निर्माण तथा जैव विविधता संरक्षण का आधार है और **विकास** तथा पर्यावरण के मध्य संतुलन **स्थापित** करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सार्वजनिक नीति एवं जैव विविधता संरक्षण

जैव विविधता संरक्षण **पर्यावरणीय** स्थिरता और सतत विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है। बढ़ते **शहरीकरण**, औद्योगिकीकरण तथा प्राकृतिक **संसाधनों** के अत्यधिक उपयोग के कारण जैव विविधता पर निरंतर दबाव बढ़ रहा है। ऐसी परिस्थितियों में सार्वजनिक नीतियाँ संरक्षण और विकास के **मध्य** संतुलन स्थापित करने में **महत्वपूर्ण** भूमिका निभाती हैं। ये नीतियाँ केवल संरक्षण के लक्ष्य निर्धारित नहीं करतीं, बल्कि उनके प्रभावी क्रियान्वयन हेतु **आवश्यक** कानूनी, प्रशासनिक और संस्थागत ढाँचा भी प्रदान करती हैं।

भारत में जैव **विविधता** संरक्षण के लिए विभिन्न कानूनों और नीतियों का निर्माण किया गया है, **जिनका** उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का **संरक्षण**, सतत उपयोग तथा पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना है। साथ ही, शहरी **क्षेत्रों** में हरित क्षेत्र, जैव विविधता पार्क, **शहरी** वन तथा जल निकायों के संरक्षण को भी नीति स्तर पर महत्व दिया जा रहा है। हालांकि, संसाधनों की कमी, **प्रशासनिक** चुनौतियाँ, सीमित जनभागीदारी तथा कमजोर क्रियान्वयन जैसी समस्याएँ इन नीतियों की प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं।

अतः जैव विविधता संरक्षण की सफलता केवल नीतियों के निर्माण पर नहीं, बल्कि प्रभावी शासन, राजनीतिक प्रतिबद्धता, संस्थागत **समन्वय** और नागरिक सहभागिता पर भी निर्भर करती है। सतत शहरों और **पर्यावरणीय** स्थिरता की प्राप्ति के लिए जैव **विविधता** संरक्षण को सार्वजनिक नीति का **अभिन्न** हिस्सा बनाना आवश्यक है।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

स्थानीय सरकारों एवं नगर निकायों की भूमिका

सतत शहरों के विकास और जैव विविधता संरक्षण में स्थानीय सरकारों तथा नगर निकायों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये संस्थाएँ नागरिकों के सबसे निकट होने के कारण स्थानीय पर्यावरणीय समस्याओं और विकास संबंधी आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझती हैं। शहरी नियोजन, हरित क्षेत्रों का संरक्षण, जल संसाधनों का प्रबंधन, ठोस अपशिष्ट निपटान तथा सार्वजनिक सुविधाओं के संचालन की प्रमुख जिम्मेदारी इन्हीं पर होती है।

स्थानीय निकाय शहरी वनीकरण, वर्षा जल संचयन, जैव विविधता पार्कों के विकास तथा पर्यावरण-अनुकूल अवसंरचना को बढ़ावा देकर पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। साथ ही, वे जन-जागरूकता कार्यक्रमों और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से नागरिकों को संरक्षण गतिविधियों से जोड़ते हैं। प्रभावी स्थानीय शासन, वैज्ञानिक शहरी नियोजन और जनभागीदारी के माध्यम से ऐसे शहरों का निर्माण संभव है जो आर्थिक रूप से विकसित, सामाजिक रूप से समावेशी और पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ हों।

राजनीतिक भागीदारी एवं पर्यावरणीय लोकतंत्र

सतत विकास और जैव विविधता संरक्षण की सफलता के लिए नागरिकों की सक्रिय भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। पर्यावरणीय लोकतंत्र की अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि नागरिकों को पर्यावरण से संबंधित निर्णयों, नीतियों और योजनाओं में भाग लेने का अधिकार और अवसर मिलना चाहिए। जनसहभागिता से नीतियाँ अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और प्रभावी बनती हैं तथा स्थानीय समस्याओं के व्यावहारिक समाधान सामने आते हैं।

नागरिक समाज संगठन, गैर-सरकारी संस्थाएँ और स्थानीय समुदाय पर्यावरणीय जागरूकता बढ़ाने, संरक्षण कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करने तथा सरकार और जनता के बीच समन्वय स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके साथ ही पर्यावरणीय न्याय यह सुनिश्चित करने पर बल देता है कि सभी नागरिकों को स्वच्छ पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों का समान लाभ प्राप्त हो।

सहभागी शहरी नियोजन, सार्वजनिक परामर्श और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण को अधिक लोकतांत्रिक और जनोन्मुख बनाया जा सकता है। इस प्रकार राजनीतिक भागीदारी और पर्यावरणीय लोकतंत्र सतत शहरों के निर्माण तथा जैव विविधता संरक्षण के महत्वपूर्ण आधार हैं, जो विकास और

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

पर्यावरण के मध्य संतुलन स्थापित करने में सहायक सिद्ध होते हैं।

## सतत विकास लक्ष्य और जैव विविधता संरक्षण

सतत विकास लक्ष्य (SDGs) वर्ष 2030 तक समावेशी विकास, सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए एक वैश्विक रूपरेखा प्रदान करते हैं। जैव विविधता संरक्षण और सतत शहरी विकास के संदर्भ में विशेष रूप से SDG-11 (सतत शहर एवं समुदाय), SDG-13 (जलवायु कार्रवाई) तथा SDG-15 (स्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण) महत्वपूर्ण हैं। ये लक्ष्य पर्यावरण-अनुकूल शहरी नियोजन, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने तथा प्राकृतिक संसाधनों और जैव विविधता के संरक्षण पर बल देते हैं।

जैव विविधता स्वस्थ पारिस्थितिक तंत्रों का आधार है, जो मानव जीवन, खाद्य सुरक्षा, जल संरक्षण और जलवायु संतुलन के लिए आवश्यक है। इसलिए सतत विकास लक्ष्यों में पर्यावरणीय संरक्षण को विकास प्रक्रिया का अभिन्न अंग माना गया है। राजनीतिक विज्ञान के दृष्टिकोण से SDGs वैश्विक शासन और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का महत्वपूर्ण उदाहरण हैं, जो विभिन्न देशों, संस्थाओं और समुदायों को साझा पर्यावरणीय उद्देश्यों की दिशा में कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं।

इस प्रकार सतत विकास लक्ष्य विकास और पर्यावरण के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास करते हैं तथा सतत शहरों, जलवायु सुरक्षा और जैव विविधता संरक्षण के माध्यम से एक सुरक्षित और टिकाऊ भविष्य के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

## सतत शहरी शासन की प्रमुख चुनौतियाँ

सतत शहरी शासन के समक्ष अनेक सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक और पर्यावरणीय चुनौतियाँ विद्यमान हैं। तीव्र जनसंख्या वृद्धि और बढ़ते शहरीकरण के कारण आवास, जल, परिवहन, ऊर्जा तथा अन्य मूलभूत सुविधाओं पर अत्यधिक दबाव पड़ता है। इसके साथ ही अनियोजित शहरी विस्तार, हरित क्षेत्रों में कमी तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग से पर्यावरणीय संतुलन और जैव विविधता प्रभावित होती है।

वित्तीय संसाधनों की कमी, विभिन्न सरकारी संस्थाओं के बीच समन्वय का अभाव तथा कमजोर प्रशासनिक क्षमता भी सतत विकास योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न करती है। इसके अतिरिक्त राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी और अल्पकालिक विकास प्राथमिकताएँ कई बार पर्यावरणीय लक्ष्यों को पीछे छोड़ देती हैं।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जल संकट तथा पर्यावरणीय असमानता जैसी समस्याएँ शहरी शासन को और अधिक जटिल बनाती हैं। विशेष रूप से कमजोर और वंचित वर्ग इन चुनौतियों से अधिक प्रभावित होते हैं। इसलिए सतत शहरी शासन के लिए प्रभावी नीतियाँ, सुदृढ़ संस्थागत व्यवस्था, पर्याप्त संसाधन, राजनीतिक प्रतिबद्धता तथा सक्रिय जनसहभागिता आवश्यक है, जिससे पर्यावरणीय रूप से सुरक्षित, समावेशी और टिकाऊ शहरों का निर्माण किया जा सके।

## निष्कर्ष

सतत शहर एवं जैव **विविधता** संरक्षण समकालीन विकास विमर्श के दो परस्पर जुड़े हुए आयाम हैं। तीव्र **शहरीकरण**, संसाधनों के बढ़ते दोहन तथा **पर्यावरणीय** चुनौतियों ने यह स्पष्ट कर **दिया** है कि विकास और पर्यावरण **संरक्षण** के बीच संतुलन स्थापित किए बिना **दीर्घकालिक** प्रगति संभव नहीं है। **अध्ययन** से स्पष्ट होता है कि जैव विविधता का संरक्षण शहरी पारिस्थितिक संतुलन, मानव स्वास्थ्य तथा सतत विकास के लिए अनिवार्य है।

राजनीतिक विज्ञान के **दृष्टिकोण** से प्रभावी शहरी शासन, उत्तरदायी सार्वजनिक नीतियाँ, सशक्त स्थानीय निकाय तथा नागरिक सहभागिता सतत शहरों के निर्माण के प्रमुख आधार **हैं**। साथ ही, हरित अवसंरचना, शहरी वनीकरण, जल संरक्षण और पर्यावरण-अनुकूल नियोजन जैसी पहलें जैव विविधता **संरक्षण** को सुदृढ़ करती हैं।

अतः सतत और **पर्यावरण**-अनुकूल शहरों के निर्माण के लिए सरकार, स्थानीय संस्थाओं, नागरिक समाज और आम नागरिकों के बीच **समन्वित** प्रयास आवश्यक हैं। विकास, **पर्यावरण** और सामाजिक न्याय के मध्य संतुलन स्थापित करके ही एक सुरक्षित, समावेशी और टिकाऊ भविष्य का **निर्माण** किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

पुस्तकें (Books)

- Baviskar, A. (2011). In the belly of the river: Tribal conflicts over development in the Narmada Valley (2nd ed.). Oxford University Press.
- Gadgil, M., & Guha, R. (1995). Ecology and equity: The use and abuse of nature in contemporary India. Routledge.
- Guha, R. (2000). Environmentalism: A global history. Oxford University Press.
- Jha, C. K. (2018). Urban governance in India: Challenges and prospects. Rawat Publications.

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026


- Kundu, A. (2019). Urban development and urban research in India. Springer.
- Shaw, A. (2015). Indian cities in transition. Orient Blackswan.

भारत सरकार के विधिक एवं नीतिगत दस्तावेज

- Government of India. (1972). The Wildlife (Protection) Act, 1972. Ministry of Law and Justice.
- Government of India. (1980). The Forest (Conservation) Act, 1980. Ministry of Environment, Forest and Climate Change.
- Government of India. (1986). The Environment (Protection) Act, 1986. Ministry of Environment, Forest and Climate Change.
- Government of India. (2002). The Biological Diversity Act, 2002. Ministry of Environment, Forest and Climate Change.
- Ministry of Environment, Forest and Climate Change. (2014). National biodiversity action plan: Addendum 2014. Government of India.
- Ministry of Housing and Urban Affairs. (2021). India smart cities mission: Annual report. Government of India.
- NITI Aayog. (2020). SDG India index and dashboard 2019–20. Government of India.

रिपोर्ट एवं आधिकारिक प्रकाशन

- Forest Survey of India. (2023). India state of forest report 2023. Ministry of Environment, Forest and Climate Change.
- National Biodiversity Authority. (2023). Annual report 2022–23. Government of India.
- Office of the Registrar General & Census Commissioner. (2011). Census of India 2011: Rural–urban distribution of population. Government of India.
- Planning Commission. (2011). Report on Indian urban infrastructure and services. Government of India.

शोध पत्र एवं जर्नल लेख

- Bharucha, E. (2002). Biodiversity and its conservation in India. Journal of the Bombay Natural History Society, 99(3), 431–440.
- Kundu, A. (2014). Urbanisation and urban governance in India. Economic and Political Weekly, 49(22), 55–62.
- Sivaramakrishnan, K. C. (2011). Re-visiting urban governance in India. Indian Journal of Public Administration, 57(1), 13–28